IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक काल में आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों की प्रसांगिकताः एक समग्र विश्लेषण

नीतू,
शोधार्थिनी,
शिक्षा विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

डॉ0 संजीव कुमार,
असिस्टेंट प्रोफेसर,
बी.एड. विभाग,
कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर (उ0प्र0)

सारः

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा के सम्मुख बहुआयामी चुनौतियाँ उपस्थित हैं, जिनमें नैतिक मूल्यों का क्षरण, अत्यधिक विशेषज्ञता का संकट, पर्यावरण के प्रति उदासीनता और सामुदायिक जुड़ाव का अभाव प्रमुख हैं। ऐसे समय में, आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार, जो गांधीवादी दर्शन से अनुप्राणित हैं, एक वैकल्पिक एवं समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। यह शोध–पत्र विनोबा भावे के शैक्षिक दर्शन के मूल सिद्धांतों का अन्वेषण करता है और आधुनिक काल में उनकी प्रसांगिकता का विस्तृत विश्लेषण करता है। विशेष रूप से, यह शोध भावे के समग्र विकास, मूल्य–आधारित शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामुदायिक सहभागिता पर बल की जाँच करता है, यह तर्क प्रस्तुत करते हुए कि उनके विचार समकालीन शैक्षिक प्रणालियों की कमियों को दूर करने और एक अधिक न्यायसंगत, टिकाऊ और मानवीय समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कुंजी शब्दः शिक्षा दर्शन, प्रसांगिकता, समग्र विकास, मूल्य–आधारित शिक्षा, आत्मनिर्भरता।

परिचय

इक्कीसवीं सदी में शिक्षा का स्वरूप अत्यंत जटिल और बहुआयामी हो गया है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा, तीव्र तकनीकी प्रगति और सूचना के विस्फोट ने जहाँ ज्ञानार्जन के नए द्वार खोले हैं, वहीं यह भी सत्य है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली कई मूलभूत चुनौतियों से जूझ रही है। इसमें केवल सूचना के संकलन पर ज़ोर, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की उपेक्षा, पर्यावरणीय चेतना का अभाव, और सामुदायिक जुड़ाव से विमुखता जैसी समस्याएँ प्रमुख हैं (यूनेस्को, 2015)। ऐसे परिदृश्य में, भारत के महान विचारक और गांधीवादी आदर्शों के प्रबल अनुयायी आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार एक विशिष्ट और प्रासंगिक विकल्प प्रस्तुत करते हैं। विनोबा भावे ने शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं माना, बल्कि इसे व्यक्ति के समग्र विकास, सामाजिक परिवर्तन और एक अहिंसक समाज के निर्माण का माध्यम समझा। उनके दर्शन का मूल आधार 'सर्वोदय' था, जिसका अर्थ है सभी का उत्थान, और यह शिक्षा के क्षेत्र में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है (भावे, 1957)। यह शोध–पत्र आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों के मूल सिद्धांतों का विश्लेषण करता है और यह स्थापित करने का प्रयास करता है कि वर्तमान युग की शैक्षिक चुनौतियों के समाधान हेतु उनके विचार किस प्रकार महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हो सकते हैं।

विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों की मूल अवधारणाएँ

आचार्य विनोबा भावे का शैक्षिक दर्शन महात्मा गांधी के 'नई तालीम' (बुनियादी शिक्षा) के सिद्धांतों पर आधारित था, लेकिन उन्होंने इसे अपनी विशिष्ट आध्यात्मिक और सामाजिक अंतर्दृष्टि के साथ विकसित किया। उनके शैक्षिक विचारों को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं में समझा जा सकता है:

i. **समग्र व्यक्तित्व विकास:** भावे का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक और व्यावसायिक पहलुओं का संतुलित विकास होना चाहिए (कुमार, 2008)। उन्होंने शिक्षा को 'ज्ञान, कर्म और भक्ति' का संगम माना, जहाँ व्यक्ति न केवल सीखता है, बल्कि कार्य करता है और नैतिक मूल्यों से ओत–प्रोत होता है। यह समग्रता उन्हें केवल विशेषज्ञ बनाने के बजाय एक पूर्ण मनुष्य बनाने पर बल देती है।

ii. **मूल्य–आधारित शिक्षा:** भावे ने नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के संवर्धन को शिक्षा की आधारशिला माना। उनके अनुसार, शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो छात्र में सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, सहयोग और निस्वार्थ सेवा जैसे गुणों का विकास करे। उनका दृढ़ विश्वास था कि चरित्र निर्माण और नैतिक चेतना के बिना शिक्षा अधूरी है और समाज के लिए अहितकर भी हो सकती है (नारायण, 1970)।

iii. **आत्मनिर्भरता एवं श्रम का सम्मान:** गांधी की तरह, भावे ने **'काम के माध्यम से शिक्षा'** पर जोर दिया। उनका मानना था कि छात्रों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान नहीं, बल्कि व्यावहारिक कौशल भी सिखाया जाना चाहिए, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। उन्होंने शारीरिक श्रम को गरिमा प्रदान की और हस्तकला, कृषि तथा अन्य ग्रामीण उद्योगों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की वकालत की। यह छात्रों को उत्पादनशील नागरिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

iv. **सामुदायिक सहभागिता एवं विकेंद्रीकरण:** भावे ने शिक्षा को सामुदायिक जीवन से गहराई से जोड़ा। उनके अनुसार, स्कूल एक पृथक संस्था नहीं, बल्कि समुदाय का एक अभिन्न अंग होना चाहिए, जहाँ बच्चे वास्तविक जीवन की समस्याओं से सीखते हैं और समुदाय के विकास में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। उन्होंने शिक्षा के विकेंद्रीकरण का भी समर्थन किया, ताकि स्थानीय आवश्यकताएँ और संस्कृति शिक्षा प्रणाली में प्रतिबिंबित हो सकें (शर्मा, 2015)।

v. **'ग्राम–मुखी' शिक्षाः** विनोबा भावे का दर्शन ग्रामीण भारत की वास्तविकता पर आधारित था। उन्होंने शहरी केंद्रित शिक्षा के बजाय ऐसी शिक्षा पर बल दिया जो ग्रामीण जीवन, उसकी चुनौतियों और उसकी संभावनाओं से संबंधित हो। उनका लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के माध्यम से स्वराज्य और आत्मनिर्भरता लाना था।

आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य की चुनौतियाँ

वर्तमान शिक्षा प्रणाली कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है, जो विनोबा भावे के विचारों की प्रसांगिकता को रेखांकित करती हैंः

i. **मूल्यहीन शिक्षाः** आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का ह्रास चिंता का विषय है, जिससे समाज में स्वार्थपरता, भ्रष्टाचार और असामाजिक प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं (कोठारी आयोग, 1966)।

ii. **अत्यधिक विशेषज्ञता और समग्रता का अभावः** वर्तमान शिक्षा व्यक्ति को अत्यधिक विशिष्ट क्षेत्रों में तो निपुण बनाती है, लेकिन यह उसे समग्र विश्वदृष्टि और जीवन के विभिन्न पहलुओं के बीच संबंध स्थापित करने में विफल रहती है।

iii. **रोजगारपरकता का संकटः** डिग्रीधारी युवाओं में बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है, क्योंकि शिक्षा प्रणाली उन्हें आवश्यक व्यावहारिक कौशल और आत्मनिर्भरता की भावना प्रदान करने में असफल रही है।

iv. **पर्यावरणीय उदासीनताः** प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन और पर्यावरणीय संकट के बावजूद, शिक्षा में टिकाऊ जीवनशैली और पारिस्थितिक चेतना का समावेश अपर्याप्त है।

v. **सामुदायिक अलगावः** शैक्षिक संस्थाएँ अक्सर अपने समुदाय से कटी हुई होती हैं, जिससे छात्र सामाजिक समस्याओं के प्रति उदासीन रहते हैं और नागरिक जिम्मेदारी की भावना कम होती है।

vi. **रटंत विद्या पर बलः** ज्ञान के सतही अधिग्रहण पर जोर दिया जाता है, जबकि रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या–समाधान कौशल का विकास गौण हो जाता है।

विनोबा भावे के विचारों की आधुनिक प्रसांगिकता

उपरोक्त चुनौतियों के आलोक में, आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार एक मार्गदर्शक सिद्धांत और प्रभावी समाधान प्रस्तुत करते हैंः

i. **समग्र विकास का मॉडलः** आधुनिक युग में, जहाँ विशेषज्ञता के कारण व्यक्ति खंडित हो रहा है, भावे का समग्र विकास का दृष्टिकोण उसे एक पूर्ण और संतुलित व्यक्तित्व प्रदान करता है। यह शिक्षा केवल नौकरी पाने का साधन नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाती है, जहाँ शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। यह व्यक्ति को बदलते परिवेश के अनुकूल ढलने और जीवन के विभिन्न पहलुओं में सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम बनाता है।

ii. **मूल्य–आधारित शिक्षा की आवश्यकताः** वर्तमान समाज में बढ़ती हिंसा, असहिष्णुता और अनैतिकता को देखते हुए, भावे का मूल्य–आधारित शिक्षा का आग्रह अत्यंत प्रासंगिक है। वेदों, उपनिषदों और अन्य धर्मग्रंथों से प्राप्त शाश्वत मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में ढालकर, शिक्षा प्रणाली एक मजबूत नैतिक आधार प्रदान कर सकती है, जिससे भावी पीढ़ी में

सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदनशीलता विकसित होगी। यह समाज में सौहार्द और शांति स्थापित करने की कुंजी है (भावे, 1962)।

iii. **आत्मनिर्भरता एवं उद्यमिता को प्रोत्साहनः** बढ़ती बेरोजगारी के संदर्भ में, भावे का 'श्रम–आधारित' और 'आत्मनिर्भरता' का सिद्धांत अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यदि शिक्षा छात्रों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान के बजाय व्यावहारिक कौशल, हस्तकला और उद्यमिता की भावना से लैस करे, तो वे नौकरी तलाशने वाले के बजाय नौकरी देने वाले बन सकते हैं। यह न केवल व्यक्तिगत समृद्धि लाता है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करता है। नई शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा पर बल, कहीं न कहीं इस विचार को प्रतिध्वनित करता है।

iv. **सामुदायिक जुड़ाव और सामाजिक उत्तरदायित्वः** आधुनिकता ने व्यक्ति को अत्यधिक आत्म–केंद्रित बना दिया है। ऐसे में, भावे का शिक्षा को समुदाय का अभिन्न अंग बनाने और छात्रों को सामुदायिक समस्याओं के समाधान में शामिल करने का विचार सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देता है। यह छात्रों में नागरिक जिम्मेदारी, सहकारिता और परोपकार की भावना विकसित करता है, जो एक स्वस्थ और जीवंत समाज के लिए अपरिहार्य है।

v. **पर्यावरणीय चेतना और टिकाऊ जीवनशैलीः** विनोबा भावे का जीवन और दर्शन प्रकृति के साथ सामंजस्य पर आधारित था। उनका 'ग्राम–मुखी' और 'सर्वोदय' का विचार पर्यावरणीय नैतिकता को स्वतः ही समाहित करता है। आधुनिक युग में जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय गिरावट की भयावह चुनौतियों के आलोक में, भावे का प्रकृति के प्रति सम्मान और टिकाऊ जीवनशैली का आग्रह शिक्षा के माध्यम से पर्यावरणीय चेतना विकसित करने में सहायक हो सकता है।

vi. **मानसिक शांति और तनाव मुक्तिः** अत्यधिक प्रतिस्पर्धी और भौतिकवादी समाज में, छात्रों में तनाव, चिंता और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ रही हैं। भावे के आध्यात्मिक और मूल्य–आधारित शिक्षा के विचार, जो आंतरिक शांति, संतोष और मानवीय संबंधों पर जोर देते हैं, छात्रों को मानसिक रूप से सुदृढ़ बनाने और जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक काल में शिक्षा के सम्मुख उपस्थित जटिल चुनौतियों के बावजूद, आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार एक सशक्त, समग्र और मानवीय विकल्प प्रस्तुत करते हैं। उनके विचार केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक व्यावहारिक रूपरेखा प्रदान करते हैं। समग्र व्यक्तित्व विकास, मूल्य–आधारित नैतिक शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामुदायिक सहभागिता पर उनका बल आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना वे अपने समय में थे।

भले ही आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञता का अपना महत्व है, लेकिन यदि इसे भावे के मानवीय, नैतिक और सामाजिक सिद्धांतों के साथ एकीकृत किया जाए, तो यह न केवल अधिक प्रभावी होगी, बल्कि एक ऐसे समाज का निर्माण भी करेगी जो न्यायपूर्ण, शांतिपूर्ण और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम हो। विनोबा भावे के विचारों को केवल सैद्धांतिक रूप से समझने के बजाय, उन्हें समकालीन शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं में समाहित करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, ताकि शिक्षा वास्तविक अर्थों में 'अविद्या से विद्या की ओर' ले जा सके और मानव मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे।

संदर्भः

i. कुमार एस., प्रोमिला और वर्मा एस.के. शैक्षिक दर्शन और शिक्षा प्रणाली पर विनोबा भावे के विचार, खंड–10, अंक–2, आईएसएसएनः 2349–5138, पृष्ठ संख्याः 634–638

ii. गुप्ता, एस. (2023), विनोबा भावे शिक्षा पर विचार, खंड 5, अंक 2, ई–आईएसएसएनः: 2582–2160, पृष्ठ संख्या 1–5

iii. कुमार, सुरेन्द्र और अंचल, अरुणा और वर्मा, शरद (2023), विनोबा भावे की शैक्षिक दृष्टिः दार्शनिक आधारों की खोज और शैक्षिक प्रणाली पर प्रभाव, रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, 8(11):85–92

iv. डॉ. यादव, एन. (2019), विनोबा जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, खंड 7, अंक 3, आईएसएसएनः 2320–2882, पृष्ठ संख्या 400–403